* H A K - 0 0 9 - 0 0 1 6 5 3 *

HAK-009-001653

Seat No. ________

Third Year B. R. S. (Sem. VI) (CBCS) Examination

June / July – 2017

Hindi (Elective - 18)

(रश्मिरथी खंडकाव्य)

(ELT-624) (New Course)

Faculty Code : 009
Subject Code : 001653

Time : $2\frac{1}{2}$ Hours] [Total Marks : **70**

सूचना :

(१) सूचनानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

(२) प्रश्न क्रमांक १ से ४ तक के १५ मार्क्स हैं ।

(३) प्रश्न क्रमांक ५ के १० मार्क्स हैं ।

१ रश्मिरथी काव्य में कवि ने दिये गये उद्देश्यों की विस्तृत चर्चा कीजिए । १५

अथवा

१ रश्मिरथी काव्य का शीर्षक कहाँ तक उचित है, सिद्ध कीजिए । १५

२ खंडकाव्य के लक्षणों के आधार पर 'रश्मिरथी' खंडकाव्य का मूल्यांकन कीजिए । १५

अथवा

२ 'रश्मिरथी' खंडकाव्य के नायक कर्ण का चरित्र–चित्रण कीजिए । १५

३ निम्नांकित **पाँच** संदर्भों में से किन्हीं **तीन** संदर्भों की ससंदर्भ व्याख्या दे : १५

(१) जाति–जाति हाय री जाति ! कर्ण का हृदय क्षोभसे डोला,
कूपित–सूर्य की ओर देख, वह वीर, क्रोध–से बोला,
जाति–जाति रहते, जिनकी पूंजी केवल पाखंड है,
मैं क्या जानूं जाति, जाति हैं – ये मेरे भुजदंड ।

(२) सुध–बुध–खो, बैठी हुई समर – चिंतन में,
कुंती व्याकुल हो उठी–सोच–कुछ मन में,
हे राम ! नहीं क्या यह संयोग रहेगा ?
सचमुच ही क्या कुंती का हृदय फटेगा ?

(३) कर्ण–मुग्ध हो भक्ति भाव में मग्न हुआ–सा जाता है,
कभी जटा पर हाथ फेरता, पीठ कभी सहलाता है,
चदे नहीं चींटियाँ बदन पर, पडे नहीं तृण पात कहीं,
कर्ण सजग है, उचट जाय गुरुवर की कच्ची नींद नहीं ।

(४) तू अवश्य क्षत्रिय है, पापी । बता–न तो फल पायेगा,
परशुराम के कठिन शाप–से अभी भस्म हो जायेगा,
क्षमा–क्षमा, हे देव दयामय ! गिरा कर्ण गुरु के पद पर,
मुख विवर्ण हो गया, अंग काँपने लगे भय से थर–थर ।

(५) ले अमोध यह अस्त्र, काल को भी यह खा सकता है,
इसका कोई वार किसी पर विफल न जा सकता है,
एक बार ही मगर, काम, तू इससे ले पायेगा,
फिर यह तूरंत लौटकर मेरे पास चला जायेगा ।

४ 'रश्मिरथी' खंडकाव्य में चित्रित समस्याओं के बारे में विस्तृत लिखे । १५

अथवा

४ चोथे सर्ग के आधार पर इन्द्र का चरित्र–चित्रण कीजिए । १५

५ समग्र काव्य के आधार पर दुर्योधन का चरित्र–चित्रण कीजिए । १०

अथवा

५ रश्मिरथी काव्य के कवि श्री रामधारीसिंह दिनकरजी का जीवन परिचय दीजिए । १०